श्रीगणेशाय नमः

ॐ नमो नारायणाय ॐ शुक्लांबरधरं विष्णुं
शशिवर्णं चतुर्भुजम् प्रसन्नवदनं ध्यायेत्स
र्वविघ्नोपशांतये अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं
पूजितो यः सुरैरपि सर्वविघ्नच्छिदे त
स्मै श्रीगणाधिपतये नमः ॐ [illegible] देवं परा
नंदं नन्दनन्दनम् [illegible] मानन्दं पूर्ण
मनन्तं प्रणमाम्यहम् ब्रह्मलोकादिह प्राप्तं
नारदं भगवत्प्रियं दृष्ट्वा नत्वा सभायान्ते पप्र
च्छुर्मुनयो मुदा २ नैमिषे निमिषे क्षेत्रे ऋ
षयः शौनकादयः देवर्षिमुपसंगम्य
पप्रच्छुरिदमादृताः ३ ब्रह्मन्केन प्रकारेण

दृताः ॥३॥ ऋषय [illegible] ब्रह्मन्केन प्रकारेण ॥
सर्वपाप[illegible]क्षयो भवेत् ॥ विना दानेन तपसा वि
नातीर्थै [illegible] व्रतैः ॥४॥ विना स्नानै विना
ध्यानै ॥ विना चेन्द्रियनिग्रहैः ॥ विना प्राण
समूहैश्च कथं मुक्तिरवाप्यते ॥५॥ नारदः ॥
देवादिदेवो देवेषु स्थितस्तपसि शंक
रः ॥ विष्णुमाराधयन्नेवं ॥ जपध्यानपराय
णः ॥६॥ इदमेव पुरा पृष्टः ॥ पार्वत्या पर
मेश्वरः ॥ यदुवाच षडक्षरं तत्कथयामि
सविस्तराम् ॥७॥ कैलास शिखरासीनं ॥
देव देवं जगद्गुरुं ॥ प्रणिपत्य महादे

वै॥ पल्कवि पुष्पकदुम[illegible]॥ ८॥ श्रीपार्वत्यु

वाच॥ भगवन् कोपि देवः॥ [illegible]॥ सर्वपूजि

तः॥ त्वत्तिदु मर्च्यते दैवैः॥ [illegible] सिद्धैरपि॥

त्वतः लभते [illegible] मतं॥ [illegible] सर्व वर प्रद॥

त्वं जन्म मरण रहितः॥ [illegible] सर्व प्राप्ति

मान्॥ २०॥ सदा ध्यायसि कं स्वामि॥ दिग्वा

सा मदनान्तकः॥ तपश्चरसि कस्मात्वं॥ जटि

लो धूलि धूसरः॥ किं वा जपसि देवेश॥ पर

कौतूहलं हि मे॥ ब्रूहि माहात्म्यं प्रियातेस्मि॥

तत्वं कथय सुव्रत॥ २२॥ महादेवः॥

नेदं कस्यापि कथितं॥ गोपनीयमिदं

मम॥ किन्तु वक्ष्यामि ते देवि तं भक्तस्तिप्र
यास्मिमे॥ १३॥ पुरा कृत युगे देवि॥ विरुद्ध
मतयो ऽखिलाः यजन्ति विष्णुमेवैके॥
ज्ञात्वा सर्वेश्वरे हरं॥ अन्ये प्रयान्ति परमा
मृद्धि॥ मैत्रिकां मुक्तिकीं परां॥ यान प्रा
प्या सुरैः सर्वैः॥ नृत्याक्षेपा वर्जिता॥ १२॥
नतां गतिं प्रपद्यन्ते॥ विना भाग वतान्नरा
न्॥ सन्मरवादपि संभूत्य॥ देवा विष्णु
बहिर्मुखाः॥ १६॥ वेदैः पुराणैः सि
द्धान्ते॥ भिन्नैर्विभ्रान्त चेतसः॥ निश्चयं
नाधि गच्छन्ति॥ किं तत्वं किं परं पदं॥ १७॥

तुलापुरुष दानाद्यै॥ रश्वमेधादिभिर्मखैः॥ वारा
णसी प्रयागादि॥ तीर्थस्नानादिभिः प्रिये॥ १८॥
गयाश्राद्धादिभिश्चैव॥ वेदपाठादिभिः
जपैः॥ तपोभिर्महोग्रै नियमै॥ यमैर्भूतदया
दिभिः॥ १९॥ गुरुशुश्रूषणैः सत्यैर्धर्मैर्व
र्णाश्रमोचितैः॥ ज्ञानध्यानादिभिः सम्य॥
क्चितं जन्मजन्मभिः॥ २०॥ नयान्ति तत्त्वं
श्रेयो॥ विष्णुं सर्वं गुरुं परम्॥ सर्वभा
वैरनाश्रित्य॥ पुराणं पुरुषोत्तमम्॥ २१॥
अनन्य गतयो मर्त्या॥ भोगिनोपि परंत
पः॥

ज्ञान वैराग्य रहिता ब्रह्मकर्मादि वर्जिताः ॥
२२ ॥ सर्वधर्मोज्झिता विष्णो नाममात्रैकज
ल्पकाः ॥ सुखेन यां गतिं यान्ति न तां
सर्वेपि धार्मिकाः ॥ २३ ॥ स्मर्तव्यः सततं वि
ष्णुर्विस्मर्तव्यो न जातुचित् ॥ सर्वे वि
धिनिषेधाः स्युरेतयोरेव किङ्कराः ॥ २४ ॥
किन्तु ब्रह्मादिभिर्देवैः पुरा दृष्टं निरंह
सः ॥ निर्भयं विष्णुनामैव यथेष्ट पद
मागतात् ॥ २५ ॥ प्रलब्धाचात्मनः पूजां ॥
सम्यगाराधितो हरिः ॥ मया चास्माद

ध्य श्रेष्ठं॥ वि[illegible]मना॥ २६॥ ततः
साक्षाज्जगन्ना[illegible] भक्त वत्सलः॥
प्रेम्णा प्रोना[illegible]ते वैतान्पूज[illegible]मास कै
प्रावैः॥[27] देवाश्चि[illegible]व कव्याद्यैः॥
वारुणामयः॥ ततः प्रभृति पूज्यन्ते॥ त्रैलो
को सचराचरे॥ २८॥ मां चोवाच्य यथा
मत्तः॥ पूज्यः श्रेष्ठो भविष्यसि॥ त्वामारा
ध्य यथा प्राम्भो॥ ग्रहीष्यामि वरं सदा॥
॥२९॥ द्वापरादौ युगे भूत्वा॥ कलया मानु
षादिषु॥ आगमे कल्पितैस्त्वं च॥ जनान्म

द्विमुखाम्बुजे ॥ ३० ॥ ततस्तं प्रणिपत्याह ॥ भक्तो

चं परमेश्वरं ॥ मां त [illegible] य येन त्वया [illegible] रेषो

त्तरोत्तराः ३१ ॥ श्रीमहादेवः ॥ ब्रह्महत्या सहस्र

स्य ॥ पापं प्राप्ते न्यथ नन ॥ पुनस्त्वद वक्त्रा

ने ॥ कल्पकोटि शतैरपि ॥ ३२ ॥ यस्मात्त्वयि

कृतास्पर्शी ॥ पवित्रः स्यां कथं हरे ॥ तन्मेक

थय देवेश ॥ प्रायश्चित्तं यथा तथा ॥ ३३ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ सदा नाम सहस्रं मे ॥

पावनं मत्पदावहं ॥ तत्पाठानुदिनं पु

म्भो ॥ सर्वस्पर्शी यदी प्रकृतिः ॥ ३४ ॥

॥ श्रीमहादेव: ॥ तमेव तपसा नित्यं ॥ भजामि
स्तौमि चिन्तये ॥ तेनाद्वितीय महिमा ॥ जगत्पू
ज्योस्मि पार्वति ॥ २५ ॥ श्री पार्वती ॥ तन्मेकथ
य देवेश ॥ यथाहं मयि शंकर ॥ सर्वेश्वरी
निरुपमा ॥ त्वस्यां सद्रूपी प्रभो ॥ २६ ॥ श्री
महादेव: ॥ साधु साधु त्वया प्रष्टं ॥ विष्णो
भगवत: प्रिये ॥ नाम्ना सहस्रं वक्ष्यामि ॥
मुख्यं त्रैलोक्य मुक्तिदम् ॥ २७ ॥ अस्य श्री
वासुदेव नाम सहस्रस्य ॥ श्री महादेव
ऋषि: ॥ अनुष्टुप्छन्द: ॥ श्रीकृष्णा परमात्मा

॥

॥

इति करतल [illegible] पृष्ठाभ्यां नमः ॥ इति कर
न्यासः ॥ [illegible] परं ब्रह्म ॥ इति हृद
याय नमः ॥ मूल प्रकृतिरानन्द ॥ इति शि
रसे स्वाहा ॥ महा वराहो [illegible] घृणं सन ॥ इति
शिखायै वौषट् ॥ सूर्य [illegible] ध्वजो राम ॥ इति
कवचाय हुँ ॥ ब्रह्मादि [illegible] लालित्य जग
दाश्रय शोभाव ॥ इति नेत्राभ्यां वौषट् ॥ प
द्मार्ध्ये वेदिता प्रोप दिव्यास ॥ इत्यास्त्राय
फट् ॥ अथ ध्यानं ॥ विष्णुं भास्वत्किरीटं ॥
कुन्दवलय गल ॥ कल्प हारो दरं वि ॥

श्रोणी भूतं सुवक्षो ॥ मणि मकर महा ॥ कुण्डला
मण्डितांगम् ॥ हस्तोद्यत्पङ्क [illegible] ॥ भुज गद
समवृतं ॥ पीत कौषीय [illegible] ॥ [illegible] स
समुद्य ॥ दिन कर सदृशं ॥ पद्म संस्थं नमामि ॥
१ ॥ नित्यं निर्मलमादि देव मनघमीशं परे ॥
शं परं ॥ सर्वात्मानमखण्डमद्वयमजं ॥ माया
परं पूर्वजं ॥ ब्रह्मेशादि नुतांघ्रि पद्म युग
लं ॥ रामं रमा कामुकं ॥ भक्तानां परमां गतिं
भव भय ॥ मोक्षैक माध्यं नृणां ॥ २ ॥ प्रत्यग्र
बाल मतसी कुसुम प्रकाशं ॥ दिग्वाससं
कनक कुण्डल भूषिताङ्गं ॥ विभ्रत्स केशा

महर्णवे दयमाय ताक्ष्ये ॥ कृष्णं नमामि मन
सा वसुदेव मुत ३ नत्वादौ ॥ श्री वासुदेव ॥
नमामि ॥ ॐ नमो नारायणाय ॥ पुरुषाय म
हात्मने ॥ विशुद्ध ॥ सत्वधिष्ण्याय ॥ महाहंसाय ॥
धीमहि ॥ तत्सद्ब्रह्मणे ॥ ॐ नमो ॥ नारायणाय ॥
ॐ श्री ईश्वर उवाच ॥ ॥ ॐ ॥ वासुदेवः ॥ परंब्र
ह्म ॥ परमात्मा ॥ परात्परः ॥ परं धाम ॥ परं ज्योतिः ॥
परं तत्वं ॥ परं पदं ॥ ३८ ॥ परः शिवः ॥ परो ध्येयः ॥
परं ज्ञानं ॥ परा गतिः ॥ परमार्थः ॥ परं श्रेयः ॥ प
रानन्दः ॥ परोदयः ॥ ३९ ॥ परो व्यक्तात्परो

व्योम ॥ परब्रह्म ॥ परमेश्वरः ॥ निरामयो ॥ निर्विकारो ॥
निर्विकल्पो ॥ निराश्रयः ॥ [illegible]जो ॥ निराल
म्बो ॥ निर्लेपो ॥ निरवग्रहः ॥ निर्गुणो ॥ निष्कलो ॥
नन्तो ॥ भयो ॥ चिन्त्यो ॥ बलो ॥ चतुरः ॥ ४१ ॥ प्रत्तीह्नि
यो ॥ मितो ॥ पारो ॥ नीशो ॥ नीहो ॥ भयो ॥ व्ययः ॥ स
र्वज्ञः ॥ सर्वगः ॥ सर्वः ॥ सर्वदः ॥ सर्वभावनः ॥
॥ ४२ ॥ सर्वप्रशास्ता ॥ सर्वसाक्षी ॥ पूज्यः ॥ सर्वस्य सर्व
दृक्‌ ॥ सर्वशक्तिः ॥ सर्वसारः ॥ सर्वात्मा ॥ सर्व
तोमुखः ॥ ४३ ॥ सर्वावासः ॥ सर्वरूपः ॥ सर्वादिः ॥
सर्वदुःखहा ॥ सर्वार्थः ॥ सर्वतोभद्रः ॥ सर्व
कारणकारणम्‌ ॥ ४४ ॥ सर्वातिशायिकः ॥ सर्वा ॥

सर्वोपेय उदासीनः ॥ प्रणवः सर्वतः समः ॥ सर्वान
वद्यो दुष्प्राप तुरीय स्तमसः परः ॥ ५० ॥ कूटस्थः ॥
सर्वसंश्लिष्टो वांमनो गोचरातिगः ॥ पृथ संक
र्षण नामाग्नि ॥ संकर्षणः सर्वहरः ॥ कालः सर्व
भयंकरः ॥ ५१ ॥ प्रनु लंघ्यः सर्वगति ॥ महार
द्रो दुरासदः ॥ मूल प्रकृतिरानन्दः ॥ प्रद्युम्नो वि
श्वमोहनः ॥ ५२ ॥ महा मायो विश्व बीजं ॥ परश
क्ति सुखैक भूः ॥ सर्वकाम्यो नन्त लीलः ॥ सर्व भूत
वशंकरः ॥ ५३ ॥ प्रनिरुद्धः सर्व जीव ॥ हृषीकेशो मनस्पतिः ॥ निरुपाधि प्रियो ॥ हंसोक्षरः ॥
सर्व नियोजकः ॥ ब्रह्म प्राणेश्वरः ॥ सर्व भू
तभृद्देह नायकः ॥ ५४ ॥ क्षेत्रज्ञः ॥ प्रकृति ॥

स्वामी पुरुषो विश्वसूत्रधृत ॥ ५५ ॥ प्रनयी
मी त्रिधामा[illegible] स्वामी त्रिगुण ईश्वरः योग
गम्यः पद्मनाभः शेषशायी श्रियः पतिः ॥
॥ ५६ ॥ श्रीसदा पाल्यपादाब्जो नन्तः श्रीः ॥
श्रीनिकेतनः नित्यं वक्षःस्थलस्थ श्रीः ॥
श्रीनिधिः श्रीधरो हरिः ॥ ५७ ॥ वश्यश्रीर्नि
श्चल श्रीदो विष्णुः क्षीराब्धिमन्दिरः कौस्तुभो
द्भासितोरस्को माधवो जगदार्त्तिहा ॥ ५८ ॥
श्रीवत्सवक्षा निः सीम कल्याण गुणभाज
नम् पीताम्बरो जगन्नाथो जगत्त्राता जग
त्पिता ॥ ५९ ॥ जगद्बन्धु जगत्स्रष्टा जगद्धा

तजन्निधिः॥ जगदेकस्फुरद्वीर्यो॥ नाहं वादी॥
जगन्मयः ६०॥ सर्वचर्यमयः॥ सर्वसिद्धार्थः॥
सर्ववीरजित्॥ सर्वामोघोद्यमो॥ ब्रह्म॥ रुद्राद्यु
[illegible]ष्ण॥ चेतनः ६१॥ प्रमो॥ पितामहो॥ ब्रह्म॥ स्व
[illegible]प्राकाद्यधीश्वरः॥ सर्वदेवप्रियः॥ सर्वदेव॥
मूर्तिरनुत्तमः॥ ६२॥ सर्वदेवैकशरणं॥ सर्व
देवैकदेवतं॥ यज्ञभुग्यज्ञफलदो॥ यज्ञेशो॥
६३
यज्ञभावनः॥ यज्ञत्राता यज्ञपुमान्वनमाली॥
द्विजप्रियः॥ द्विजैकमानदो॥ विप्रकुल
देवो॥ सुरान्तकः ६४॥ सर्वदुष्टान्तकृत्सर्व॥
सज्जनानन्यपालकः॥ सप्तलोकैकजठ॥

ठरः ॥ सप्तलोकैक ॥ मण्डनः ॥ ६५ ॥ सृष्टिस्थित्य ॥

न्तकृत्स्वकी [illegible] ॥ धराधरः ॥ पूंत्वभ्यन्तर

की पद्म [illegible] ॥ [illegible]ः ॥ ६६ ॥ अनिर्देश्य पुण्य ॥

पुः ॥ सर्वार्दिः सर्व त्रैलोक्य ॥ पावनः ॥ अनन्त कीर्त्ति ॥

र्निः सीम ॥ पौरुषः ॥ सर्व मंगलः ॥ ६७ ॥ सूर्य कोटि ॥

प्रतीकाशो ॥ यम कोटि दुरासदः ॥ ब्रह्म कोटि ॥

जगत्स्रष्टा ॥ वायु कोटि ॥ महाबलः ॥ ६८ ॥ कोटी

न्दु ॥ जगदानन्दी ॥ शम्भो कोटि ॥ महेश्वरः ॥ कुबेर

कोटि ॥ लक्ष्मी ॥ वा ॥ शक्र कोटि ॥ विलासवान् ॥ ६९ ॥

कन्दर्प कोटि ॥ लावण्या ॥ दुर्गा कोट्यारि मर्द ॥ नः ॥

समुद्र कोटि गम्भीर ॥ तीर्थ कोटि समाह्वयः ॥ हि
म वत्कोटि निष्कम्प ॥ कोटि ब्रह्माण्ड विग्रहः ॥ को
ट्यश्वमेध पापघ्नो ॥ यज्ञ कोटि समार्चनः ॥ ७२ ॥
सुधा कोटि स्वास्थ्य हेतुः ॥ कामधुक् कोटि कामदः ॥
ब्रह्मविद्या कोटि रूपः ॥ शिपिविष्टः ॥ शुचि
श्रवः ॥ ७२ ॥ विश्वम्भर तीर्थ पादः ॥ पुण्य श्रव
ण कीर्तनः ॥ आदि देवो ॥ जगज्जैत्रो ॥ मकुन्दः ॥
कालनेमिहा ॥ ७३ ॥ वैकुण्ठो ॥ नन्त ॥ माहात्म्यो ॥
महायोगी ॥ श्वरोत्सवः ॥ नित्य तृप्तो ॥ लसद्भा
वो ॥ निःशंको ॥ नरकान्तकः ॥ ७४ ॥ दीना
नाथैक ॥ शरणं ॥ विश्वैक व्यसनापहः ॥ ७५

जगत्कृपा क्षमो नित्य कृपालुः सज्जनाश्रयः ॥
७४ योगीश्वरः सदोदीर्णो वृद्धिक्षय विवर्जितः ॥
७प्रधोक्षजो विश्वरेतः प्रजापति शताधिपः ७६ ॥
पृथु ब्रह्मार्चित पाद शम्भु ब्रह्मोर्ध्व धामगः ७७ ॥
जगत्सेतु र्धर्म सेतु र्धरो विश्वधुरन्धरः निर्म
मो खिल लोकेशो निःसङ्गोद्भुत भोगवान् ७८
वश्य मायो वश्य विश्वो विश्वक्सेनः सुरो
त्तमः सर्व श्रेयः पति र्दिव्या नर्घ्य भूषण भू
षितः ७९ सर्व लक्षण लक्षण्यः सर्व दैत्येन्द्र
दर्पहा समस्त देव सर्वस्वं सर्व दैवत ॥

नायकः ॥ ८० ॥ समस्त देवकवचं ॥ सर्व देव शि

रोमणिः ॥ समस्त देवता [illegible] ॥ प्रयत्न प्राप्ति

पञ्जरः ॥ ८१ ॥ समस्त [illegible] र्भिनामा भगवा

न्विष्टर भावः ॥ विभुः ॥ सर्व हितैकदक्षो ॥ हन्ता

रः स्वगतिप्रियः ॥ ८२ ॥ सर्व देवता ॥ जीवे प्रा ॥

ब्राह्मणादि नियोजकः ॥ ब्रह्म प्राम्भु परा

व्यायु ॥ ब्रह्म ज्येष्ठ ॥ शिपुः ॥ सुराट ॥ ८३ ॥

विराड्भक्त पराधीनः ॥ स्तुत्यः ॥ स्तोत्रार्थ ॥ साध

कः ॥ परार्थ कर्ता ॥ कृत्यज्ञः ॥ स्वार्थ कृत्य

सदोज्झितः ॥ ८४ ॥ सच्छदा नवः ॥ सदाभद्रः ॥

सदा पूर्णः सदाशिवः सदा प्रियः स
दातुष्टः सदा पुष्टः सदार्च्चितः ८५ सदा
पूता पावनात्मा वेद गुह्यो वृषा कपिः
सहस्रनामा त्रियुगश्चतुर्मूर्त्ति चतुर्भुजः
॥८६॥ भूतभव्य भवन्नाथो महा पुरुष पूर्वजः
नारायणो मुञ्जकेशः सर्व योग विनिः
सृतः ॥८७॥ वेद सारो यज्ञसारः सामसार
स्तपोनिधिः साध्यः श्रेष्ठः पुराणर्षि र्नि
ष्ठा शान्तिः परायणं ॥८८॥ शिव त्रिशूल
ल विध्वंसी श्रीकण्ठै कवर प्रदः ॥

नरः कृष्णो ॥ हरिर्धर्मो ॥ नन्दनो धर्म जीवनः ॥ ८९ ॥
आदि कर्त्ता ॥ सर्व सत्य ॥ सर्व स्त्री रत्न ॥ दर्पहा ॥
त्रिकालजित ॥ कन्दर्प ॥ उर्वशी ॥ हृद्कुली मुरः ॥ ९० ॥
आद्यः ॥ कविर्हयग्रीवः ॥ सर्व वागी ॥ श्वरी ॥ श्वरः ॥
सर्व देव ॥ मयो ब्रह्म ॥ गुरु वागी ॥ श्वरी पतिः ॥ ९१ ॥
अनन्त विद्या ॥ प्रभवो ॥ मूल विद्या ॥ विनाश
कः ॥ सर्वज्ञादो ॥ जगज्जाड्य ॥ नाशको ॥ मधु
सूदनः ॥ ९२ ॥ अनेक मन्त्र ॥ कोटीशः ॥ शब्द
ब्रह्मैक ॥ पारगः ॥ आदि विद्वान् ॥ वेद कर्त्ता ॥
वेदात्मा ॥ श्रुति सागरः ॥ ९३ ॥ ब्रह्मार्थवे

दाहरणः सर्व विज्ञान जन्मभूः ॥ विद्याराजो ज्ञान
मूर्त्ति ज्ञान [illegible] ॥ १४ ॥ मन्मथ देवाम
हा [illegible] ॥ लीलाव्याप्ताखि
लाम्बोधि श्चतुर्वेद प्रवर्तकः ॥ १५ ॥ आदिकूर्मो खि
लाधार स्तृणीकृत [illegible] ॥ प्रमरीकृत देवौ
घः पीयूषोत्पत्ति कारणं ॥ १६ ॥ आत्माधारो धरा
धारो यज्ञाङ्गो धरणीधरः ॥ [illegible] हिरण्याक्ष हरः ॥
पृथ्वी पतिः श्राद्धादि कल्पकः ॥ १७ ॥ समस्त
पितृ भीतिघ्नः समस्त पितृ जीवनं ॥ हव्य
कव्यैकभुग्हव्य कव्यैक फलदायकः ॥

रोमान्तरीनजलधिः क्षोभितो प्रोत सागरः महा
वराहो यज्ञशत्रुध्वंसनो ... ९९
नरसिंहो दिव्यसिंहः सर्वानिष्टार्ति दुःखहा
एकवीरोद्भुतबलो यन्त्रमन्त्रैकभञ्जनः १००
ब्रह्मादिदुःसहज्योतिः युगान्ताग्न्यतिभीषणः
कोटिवज्राधिकनखो जगद्दुष्प्रेक्ष्यमूर्तिधृक् १
मातृचक्रप्रमथनो महामातृगणेश्वरः अचि
न्त्यामोघवीर्याढ्यः समस्तासुरघस्मरः २
हिरण्यकशिपुच्छेदी कालसंकर्षणीपतिः
कृतान्तवाहनः सद्यः समस्तभयनाशनः ३
सर्वविघ्नान्तकः सर्वसिद्धिदः सर्वपूरकः

सर्वैल पातकध्वंसी ॥ सिद्ध मन्त्राधिका ह्वय: ॥ ४
भैरवेशो ॥ हर: निघ्न: ॥ काल कोटि दुरासद: ॥
दैत्यगर्भस्रावि नामा ॥ स्फुर ब्रह्माण्डुगर्जित: ॥
स्मृत मात्राखिल त्राता ॥ भूतरूपो ॥ महा हरि: ॥
ब्रह्म चर्मपिधाता ॥ वह्नि ॥ दिक्पालो ध्वाङ्क्ष भूषण: ॥ ६ ॥
द्वादश्यार्क ॥ शिरो दामा ॥ रुद्र शीर्षैक ॥ नूपुर: ॥
योगिनी ॥ ग्रस्त गिरिजा ॥ त्राता भैरव ॥ तर्जक: ॥ ७ ॥
बीर चक्रे ॥ श्वरो त्युग्रो ॥ यमारि: ॥ काल शम्भक: ॥
क्रोधी श्वरो ॥ रुद्र जण्डी ॥ परिवारादि दुष्ट भुक ॥ ८ ॥
सर्वाक्षी ॥ म्यो मृत्यु ॥ मृत्यु: ॥ काल मृत्यु निवर्तन: ॥

असाध्य सर्व रोगघ्नः सर्व दुर्ग्रह सौम्य कृत् ९
गणेशा कोटि दर्पघ्नो दुःसह [illegible] गोत्र कृन्त
देव दानव दुर्दर्पघ्नो जगत्त्रय भीषकः १०
समस्त दुर्गति त्राता जगद्भक्षक भक्षकः ३
[illegible] खर मार्जारः काल मूषक भक्षकः ११
अनन्ता युध दोर्दण्डो नृसिंहो वीरभद्र
जित् योगिनी चक्र गुह्येशः शाकारि
पपरुमांसभुक् १२ रुद्रो नारायणो भी
ष रूप शंकर वाहनः मेषरूप क्षि
त्राता दुष्ट प्राणि सहस्र भुक् १३
तुलसी वल्लभो वीरो वामाचारोऽखि

लेष्टदः ॥ श्मशानप्रियः ॥ प्रावाहढो ॥ भैरवैक
कपालभृत् ॥ १४ ॥ त्रिशूली चक्रेश्वरः ॥ प्राक्र ॥ दिव्य
मोहनहरः ॥ गौरी सौभाग्यदो माया ॥ निधि
मायाभयापहः ॥ १५ ॥ ब्रह्मतेजो ॥ मयो ब्रह्मश्री ॥
मयप्रपञ्चमयीमयः ॥ सुब्रह्मण्यो ॥ बलिध्वंसी ॥
वामनोदितिदुःखहा ॥ १६ ॥ उपेन्द्रो नृपतिर्वि
ष्णुः ॥ कश्यपान्वयमण्डनं ॥ बलिस्वाराज्यदः ॥
सर्व ॥ देवविप्रान्नदोच्युतः ॥ १७ ॥ उरुक्रम
स्तीर्थ ॥ पाद ॥ स्त्रिपदस्थस्त्रिविक्रमः ॥ व्योम
पादः ॥ स्वपादाम्भः ॥ पवित्रितजगत्त्रयः ॥ १८ ॥

ब्रह्मेशाद्यभि ॥ वन्द्यांघ्रि ॥ र्धृतधर्माद्रि ॥ धावनः ॥ अचि

न्त्य चिन्त्याद्भुत ॥ विस्तारो ॥ विश्वकेशो महाबलः ॥ १९ ॥

राहु मूर्धा पराङ्ग छिद् ॥ भृगु पत्नी ॥ शिरो हरः ॥

पापत्रस्तः ॥ सदा पुण्यो दैत्याशा नित्य खंडनः २ ॥ ॥

पूरिताखिल देवाशो ॥ विश्वार्थैकावतार कृत् ॥

स्व मायानित्य ॥ गुप्तात्मा ॥ भक्त चिन्तामणि ॥

सदा ॥ २१ ॥ वरदः ॥ कार्तवीर्यादि ॥ राजराज्य

प्रदोनघः ॥ विश्वश्लाघ्यो ॥ मिता ॥ चारो ॥ दत्ता

त्रेयो मुनीश्वरः ॥ २२ ॥ ~~[illegible]~~ तेजोमय

~~[illegible] पद्मपः~~ पर शक्ति सदाश्लिष्टो ॥ यो

गानन्द ॥ सदोन्मदः ॥ समस्तेश्वर ॥ तेजो

हन्तपरमा मतपदप्रपः २३ मनुसूया गर्भरवं
भोगमोक्ष ... प्रदः जमदग्नि कुलादित्यो
रेणुकाद्भुत ... कृत २४ मातृहत्यादि नि
र्लेपः स्कन्द ... राज्यदः सर्वदाज्ञान्त
कृद्वीर दर्पहा कार्तवीर्य जित २५ सप्तद्वी
पवती दाता शिवाचार्य यशः प्रदः भीमः
परशुरामस्य शिवाचार्यैक विश्वभूः २६
शिवाखिल ज्ञानकोशो भीष्माचार्याग्नि
दैवतः द्रोणाचार्य गुरुर्विश्वजैत्र धन्वा कृ
तान्तजित २७ प्रद्वितीय तपोमूर्ति ब्रह्म

चर्यैक दक्षिणः ॥ मनुः श्रेष्ठः सतां हेतु र्मही
यान्वृषभो विराट् ॥ २६ ॥ आदि राजः क्षितिपि
ता सर्व रत्नैक दोह कृत ॥ पृथुर्जन्मादैकदक्षो
णीः श्रीः कीर्ति स्वयं वृतः ॥ २९ ॥ जगद्वृत्तिप्र
दश्चक्र वर्ति श्रेष्ठो दयास्वधनः ॥ सनकादि
मुनि प्राप्य भगवद्भक्ति वर्धनः ॥ ३० ॥ वर्णा
श्रमादि धर्माणां ॥ कर्ता वक्ता प्रवर्तकः ॥
सूर्य वंश ध्वजो रामो ॥ राघवः सद्गुणार्णवः ॥ ३१ ॥
काकुस्थो ॥ वीर राड्राजो ॥ राजा धर्मधुरन्धरः ॥
नित्य स्वस्थाश्रयः ॥ सर्व भद्र ग्राही शुभै

कदृक् ३२ नर रत्नं रत्नगर्भो धर्माध्यक्षो महा
निधिः सर्वलोकनाथः सर्व प्रासाद ग्राम
वीर्यवान् ३३ जगद्दर्पी दापारपिः सर्वा
रत्ना श्रेयो नृपः समोऽह धर्मेशः सर्व धर्म
दृष्टा शिवलासी हर ३४ प्रतीन्द्रो ज्ञान वि
तान पार दृश्वा समाम्बुधिः सर्व प्रकृष्टः
शिष्टेष्टो हर्ष शोकाद्यनाकुलः ३५
शिवतत्त्व ३६ साम्राज्यः सपत्नोदय नि
र्भयः गुहादोषार्षितैश्वर्यः शिवस्पर्धः

जटाधरः॥ २६॥ चित्रकूटाप्ररत्नाद्रि जगदीशो॥

वनेचरः॥ यथेष्टामोघसर्वांशो देवेन्द्रतन

यरक्षिहा॥ २७॥ ब्रह्मेन्द्राद्यैर्नतैषीको मारीचघ्नो॥

विराधहा॥ ब्रह्मशापहताशेष दण्डकार

ण्य पावनः॥ २८॥ चतुर्दशसहस्रोग्ररक्षो

घ्नैकशरैककृत॥ खरारिस्त्रिशिरो हन्ता॥

दूषणघ्नो जनार्दनः॥ २९॥ जटायुषोऽग्निगति

दो॥ गस्त्यसर्वस्वमन्त्रराट्॥ लीलाधनुष्कोटि॥

पात दुन्दुभ्यस्थि॥ महाचयः॥ ३०॥ सप्तताल

व्यधाकृष्ट॥ ध्वस्तपातालदानवः॥ सुग्रीव॥

राजदो हीन मानसैवाभयप्रदः ४१ हनुम
द्रुदमुखेपाः समस्त कपिदेहभजन सेना
गदैत्य बालीक व्याकुले कृत सागरः ४२
सम्लेषकृत कोटि बालीक मुक्तनिदग्ध साग
रः समुद्रादभुत पूर्वैक बन्धसेतुर्यपो
निधिः ४३ प्रसाध्य साधको लंका समूलो
त्कर्ष दक्षिणः वरदृप्त जगत्प्रकल्प पौल
स्त्य कुल कृन्तनः ४४ रावणिघ्नः प्रहस
च्छिद कुम्भकर्णभिदुग्रहा रावणैक शिर
श्छेत्वा निःपंकेन्द्रकराज्यदः ४५

खगी सगेत्व ॥ विपूवेदी ॥ देवेन्द्रा ॥ निद्रगा ॥ हरः ॥ रक्षो
देव ॥ स्वहृद्दूमो ॥ धर्मलघुः ॥ पुरुहूतः ॥ ४६ ॥ नति
मात्र ॥ दपूास्यारि ॥ दत्त राज्य विभीषणः ॥ सुधावृष्टि
मृतापुत्र ॥ ससैन्यो ॥ जीवनेककृतु ॥ ४७ ॥ देव ब्रा
स्त ॥ नाभेक ॥ धता सर्वा ॥ मराचितः ॥ ब्रह्म सूर्येन्द्र
रुद्रादि ॥ वन्द्यार्पित सती प्रियः ॥ ४८ ॥ प्रयोध्या ॥
रिवल ॥ राजग्यः ॥ सर्वभूत ॥ मनोहरः ॥ स्वामित्य तु
स्य ॥ कृपा ॥ दण्डो ॥ हीनो ॥ कृष्टैक ॥ सत्प्रियः ॥ ४९ ॥
स्वपक्षादि ॥ न्याय दर्शी ॥ हीनो र्वाधि ॥ साध
कः ॥ वध व्याजानु ॥ चितकृ ॥ जार्को रिवल ॥

तुल्यकृत ५ पार्वत्यधिक ॥ मुक्तात्मा ॥ प्रिय
त्यक्त स्वर्गैरजित ॥ साक्षात्कुचर ॥ वपुक्लेश
न्यूनाग्नितातो पराजित: ५१ ॥ कामदेवेन्द्रावी
र बाहु: ॥ सत्यार्थ त्यक्त सोदर: ॥ प्रियारम्भा
न निर्वृत ॥ धरणी मण्डलो जय: ५२ ॥ ब्रह्मा
र्द्दि काम्य ॥ सान्निध्य सनाथी ॥ कृत दैवत: ॥
ब्रह्म लोकाप्त ॥ चण्डर ॥ दोषोष ॥ प्राप्ति सा ॥
घेप: ॥ ५३ ॥ हनीत ॥ नद्दि भाग्याद्रि ॥ स्थिरायो
ध्यान ॥ वैक कृत ॥ रामद्वितीय: ॥ सौमि
लक्ष्मण: ॥ प्रहतेन्द्रजित ॥ ५४ विष्णु ॥

पुरमांप्रि॥ पादुकाराज्य॥ निर्वृ॥ तिः॥ भरतो सह

गन्धर्वो॥ कोटिघ्नो॥ लवणान्तकः॥ ५५॥ व्याघ्रघ्नो॥

वैश्रवणदायु॥ वेदगर्भो॥ वधपतिः॥ १ न्नतामृत॥

करोधान्वन्तरिः॥ यंत्रो॥ जगद्गुरुः॥ ५६॥ सूर्यो

रिघ्नः॥ खरो॥ जीवो॥ दक्षिणेशो॥ द्विजप्रियः॥

छिन्नमूर्धो॥ परे॥ पूर्णार्कः॥ शोभाङ्गः॥ स्थापिता॥

मरः॥ ५७॥ विश्वास्थाम॥ पूषा॥ रुद्रार्च्यो॥ पिर॥

पूरुदाक्षताकृतिः॥ वाजपेया॥ दिना॥ मानि॥

वेदधर्मा॥ परायणः॥ ५८॥ ह्रे॥ पूर्वेत॥ दीपपतिः॥

सांख्य॥ प्रणेता॥ सर्वसिद्धि॥ राद॥ विश्वप्र

कौ॥ ब्रह्मताहो॥ हलायुधः॥ ६३॥ नीलाम्बरो॥
वारुणीप्रेमा॥ मन्दो वा॥ कायदोषहा॥ सं
तोषहृष्टिमान्॥ पालितैक दषाननः ६४॥
बलि संभ्रमयमनो॥ घोरो॥ रौहिणेयः॥ प्रल
म्बहा॥ मुष्टिकघ्नो॥ द्विविदहा॥ कालिन्दी॥
कर्षणो॥ बलः॥ ६५॥ रेवतीरमणः॥ पूर्व॥
भक्तिखेदाच्युताग्रजः॥ देवकी॥ वसुदेवाह्व॥
कश्यपादित्य॥ नन्दनः॥ ६६॥ वार्ष्णेयः॥
सात्वतां श्रेष्ठः॥ शौरिर्यदु॥ कुलेश्वरः॥ न
राकृतिः॥ परंब्रह्म॥ सव्यसाचीवरप्रदः॥ ६७॥

ब्रह्मादिकाम्य लालित्य ॥ जगदाश्चर्य ॥ शैशवः ॥
पूतनाघ्नः ॥ शकटभिद् ॥ यमलार्जुनभञ्जनः ॥
६८ वातासुरारिः ॥ केशिघ्नो ॥ धेनुकारिर्ग ॥
वीश्वरः ॥ दामोदरो ॥ गोपदेवो ॥ यशोदानन्द ॥
दायकः ॥ ६९ ॥ कालीयमर्दनः ॥ सर्वगोप ॥
गोपीजनप्रियः ॥ लीला ॥ गोवर्धनधरो ॥ ॥
गोविन्दो ॥ गोकुलोत्सवः ॥ ७० ॥ अरिष्टम ॥
थनः ॥ कामोन्मत्त ॥ गोपी ॥ विमुक्तिदः ॥ सद्यः
कुवलयापीड ॥ घाती ॥ चाणूर ॥ मर्दनः ॥ ७१ ॥

कंसारिर्हत सेनानि राज्यव्यापारि मरः सु
धर्माङ्क्तभूर्लोको जरासन्ध [illegible] न्तकः ७२
त्यक्तभग्नजरासन्धो भीमसेनयशःप्रदः
सांदीपनिमृतापत्य दाता कालान्तकादि
जित ७३ समस्त नारक त्राता सर्वभूपति
कोटिजित रुक्मिणी रमणो रुक्मि शास
नो नरकान्तकः ७४ समस्त सुन्दरीका
न्तो मुरारि गरुडध्वजः एकाकी जित
रुद्रार्क मरुदाद्य खिलेश्वरः ७५

देवेन्द्र दर्पहा कल्प द्रुमालंकृत भूतलः॥ बाण
बाहु सहस्रच्छिन्ना न्धादि गण कोटि जित्॥ ७६॥
लीलाजित महादेवो महादेवैक पूजितः॥ इन्द्रा
र्थार्जुन निर्भंग जयदः पाण्डवैकधृक्॥ ७७॥
काशिराज शिरश्छेत्ता रुद्र शक्त्यैक मर्दनः॥
विश्वेश्वर प्रसादाढ्यः काशीराजसुतार्दनः॥ ७८॥
शंभु प्रतिज्ञा विध्वंसी काशी निर्दग्धनायकः॥
काशीश गण कोटिघ्नो लोकशिक्षा द्विजा
र्चकः॥ ७९॥ शिवव्रती व्रतपो वप्ता॥ पुरा
शिव वरप्रदः॥ शंकरैक प्रतिष्ठाधृक्॥

जिता शेष देव देवी जगत्प्रिय: ॥ ९३ ॥ निरा
कृत्य [illegible] मोहन: दैत्य
वेद बहि: [illegible] ॥ ९४ ॥
शौद्धोदनि [illegible] सर्वविद: सदसत्पति: ॥
यथा योग्याखिल कृप: सर्व शून्योऽखि
लेष्टद: ॥ ९५ ॥ चतुष्कोटि पृथक् तत्वं प्रज्ञा
पार मितेश्वर: ॥ पाखण्ड श्रुति मार्गेषु: ॥
पाखाण्ड श्रुति गोपक: ॥ ९६ ॥ कल्की वि
ष्णु मय: पुत्र: ॥ कलि काल विलोपक: ॥

कर्त्तो च सर्व [illegible] प्राप्नोति प्रिये ॥ तो
कानां भाग्यहीनानां [illegible] दुःखं विनश्यति ॥ २२६ ॥
[illegible] भविष्यति ॥
नास्ति विष्णोः परं सत्यं नास्ति विष्णोः
परं पदम् ॥ [illegible] नास्ति परं ज्ञानं नास्ति मो
क्षम ॥ वैष्णवं ॥ नास्ति विष्णोः ॥ परं स्थानं ॥
नास्ति विष्णोः ॥ परं जपः ॥ २२८ ॥ नास्तिवि
ष्णोः ॥ परं ध्यानं ॥ नास्ति मन्त्रम ॥ वैष्णवं ॥
किं तस्य ॥ बहुभिर्मन्त्रैः ॥ पुराणैः किं बहु ॥